ISSN- 2454-2695
Volume 03 Issue 0
January 2017

साहित्य संहिता

Available at http://www.sahityasamhita.org/

इक्कीसवीं सदी में प्रेमचन्द की प्रासंगिकता

नाम किरन देवी

पिता का नाम श्री भइयालाल

जन्म तिथि 15/10/1988

जन्म स्थान चित्रकूट(उ.प्र.)

शिक्षा MA.BEd.NET(HINDI)

संप्रति सहायक

प्रोफेसर,अभिनवप्रग्या महाविद्यालय हमीरपुर

मानवता के विकास पर प्रश्न चिह्न क्यों लगा है और कवि या लेखक क्या कर रहे हैं। आज प्रत्येक कृति का महत्त्व इसी दृष्टि से आँका जाता है कि वह अपने युग के लिए कितनी उपयोगी है? युगीन समस्याओं के प्रति कितनी जगरूक है? भविष्य में कितनी प्रासंगिक एवं उपयोगी होगी? आज भूमण्डलीकरण के दौर में मनुष्य के समक्ष सबसे बड़ा संकट है, उसकी मनुष्यता को बचाए, जिलाए रखना, लाख विघ्न–बाधाओं के बावजूद। समाज में मूल्य, नैतिकता, ईमानदारी, पारस्परिकता अपना अर्थ और प्रत्यय खोते जा रहे हैं। प्रत्येक व्यक्ति भयाक्रांत और संकटग्रस्त हैं और भ्रष्टाचार की कठिन माँग है आदमियत बचाए रखने की। अन्याय, शोषण, और भ्रष्टाचार में लिप्त आदमी को सत्पथ पर लाने के लिए जागरूक करने की। ऐसे में, प्रेमचन्द–साहित्य की प्रासंगिकता और उपादेयता और बढ़ जाती हैं जिनके साहित्य रचना का एक मात्र उद्देश्य मानवता की सेवा है। "प्रेमचन्द्र ने प्रगतिशील लेखक संघ के अधिवेशन में कहा था कि साहित्य वही है, जो जागरण का गीत गाए। लोगों को अपने कर्तव्य और अधिकार के प्रति प्रतिबद्ध बनाए।"

प्रेमचन्द मानव की मानवता का उद्घाटन करते हैं, उसकी जिन्दगी की हकीकतों से हमारा साक्षात्कार कराते हैं। समाज में बढ रहे उत्पीड़न, अन्याय और शोषण के विरूद्ध आवाज उठाते हैं उनकी समसामयिकता और प्रासंगिकता पर प्रश्न चिह्न लगाना बेमानी है। प्रेमचन्द के पूर्व की उपन्यास परम्परा में बालकृष्ण भट्ट, श्रीनिवास दास, राधाचरण गोस्वामी, ठाकुर जगमोहन सिंह, गोपालराम गहमरी, गौरी दत्त, किशोरीलाल गोस्वामी, देवकीनन्दन खत्री आदि रचनाकारों ने विविध विषयों पर उपन्यासों की रचना की। इन रचनाकारों में कोइ 'तिलस्मी और ऐयारी गाथा लिखकर अपनी कल्पना शक्ति का परिचय देता था, तो कोई जासूसी और साहसिक उपन्यासों की रचना में मशगूल था और कोई रीतिकाल के प्रभाव में आकर प्रेम और रोमांस को अपनी कथावस्तु का विषय बनाकर पाठकों का सरस मनोरंजन करता था।

प्रेमचन्द के पूर्व उर्दू उपन्यासकारों में हैदरी, निहालचन्द लहौरी, मज़हर अली खां, मिर्जा रजब, रतननाथ सरशार, शरर और महुम्मद हादी रूसवा आदि उपन्यासकार हए, जिनमें कोई कल्पना की उड़ान भरता था, जो कोई जमीन पर पैर रखकर चलता था। कोई किस्सा लैला–मजनूं और किस्सा हातिम ताई का बयां करता तो कोई इस्लाम और अरब की ऐतिहासिक घटनाओं को लेकर मसुलमानों की सभ्यता और संस्कृति का विश्लेषण करता था। समग्र रूप से यह कहा जा सकता है कि प्रेमचन्द के पूर्व उपन्यास परम्परा में रचनाकार स्वप्न देखता था और मनमाना तिलिस्म बांधता था। उसके कथा साहित्य का जीवन से कोई विशेष सरोकार न होकर मात्र मनोरंजन से था। ऐसी स्थिति में प्रेमचन्द ने साहित्य को जीवन से जोड़ा और उसे एक नई दिशा दी। उन्होंने उपन्यास को मनोरंजन के क्षेत्र से निकाल कर तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक समस्याओं से सम्बद्ध किया।

प्रश्न यह है कि आज उनका साहित्य प्रासंगिक है या इसे इतिहास के पेट में डाल देना चाहिए अथवा वह काल और परिवेश की सीमा में बद्ध होकर बासी हो गया है। हम यह मानते हैं कि साहित्य निश्चय ही प्रासंगिक है; लेकिन कल भी इतना ही प्रासंगिक रहेगा, यह नहीं कहा जा सकता। तुलसीदास आज अप्रासंगिक हैं, यह कहना कठिन है। लेकिन क्या प्रेमचन्द और तुलसीदास की प्रासंगिकता एक जैसी है? यदि नहीं, तो इसका कारण, काल और परिवेश है। तुलसीदास के समय की जो सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक समस्याएं थीं, उनमें बदलाव आ चुका है। लेकिन प्रेमचन्द के युग की जो समस्याएं थीं वे आज बहुत नहीं बदलीं। सामाजिक व्यवस्था, उसकी विसंगतियां और अन्तर्विरोध आज भी ज्यों के त्यों अपने विकराल रूप में विदय्मान है। फिर प्रेमचन्द की प्रासंगिकता पर प्रश्न चिह्न कैसा?

जो प्रेमचन्द की प्रासंगिकता पर प्रश्न चिह्न लगाते हैं, उनसे पूछा जा सकता है कि क्या आज कमलाचरण (वरदान) अपने धनवान बाप की सम्पत्ति का नाजायज उपयोग करता नहीं दिख पड़ता? क्या आज महन्त रामदास (सेवासदन) नहीं है, जो 'श्री बाके बिहारी' के नाम पर समाज का शोषण करता है, हत्या करवाता है, मन्दिरों में वेश्यावृत्ति करवाता है और रामनामी दपुट्टा ओढ़कर वासनामयी दृष्टि से महिलाओं को देखता है? क्या आज ज्ञानशंकर (प्रेमाश्रम) जीवित नहीं हैं, जो सम्पत्ति और जायदाद के लालच में विधवा गायत्री पर डोरे डालता है, भक्ति का छद्म वेष दिखलाता है, अपने भाई से इस कारण चिन्तित रहता है कि वह पिता की सारी सम्पत्ति के आधे का हकदार है। वह अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए किसी को विष भी दे सकता है? क्या आज गौस खां (प्रेमाश्रम) नहीं है, जो किसानों पर जुल्म और कहर ढाता

ISSN- 2454-2695
Volume 03 Issue 0
January 2017

साहित्य संहिता

Available at http://www.sahityasamhita.org/

है? क्या आज प्त्येक दरोगा दयाशंकर (प्रेमाश्रम) का प्रतिरूप नहीं है, जो धांधली मचाते हैं, झूठे मकुदमें और अभियोग बनाते हैं और किसानों, गरीबों तथा दलितों से नाजायज मुचकले लेते हैं? क्या आज नवयौवना पत्नी का वृद्ध पति तोताराम (निर्मला) अपनी पत्नी को प्रसन्न करने के लिए वस्त्र और आभूषण लाते हुए नहीं दीख पड़ता और प्रसन्न न कर पाने पर निर्मूल शंकाएं नहीं करता? क्या आज सूरदास (रंगभूमि) सड़क पर भीख मांगते हुए नहीं दिख पड़ता, जिसकी भूमि पर उसके विरोध करने पर भी कारखाना खुल जाता है। यही नहीं अहिंसा का अनन्य उपासक सूरदास क्या हिंसा का शिकार नहीं होता? क्या आज जनसेवक (रंगभूमि) का अभाव है; जो अपने स्वार्थ के लिए सब कुछ करने के लिए तैयार रहता है? क्या आज मध्यवर्गी यवुक रमानाथ (गबन) बिल्कुल मर चुका है, जो मिथ्या प्रदर्शन के कारण गबन करता है? क्या आज खटिक (गबन) नहीं है, जो स्वदेश हित अपने दो पुत्रों को गवांकर भी देश–प्रेम से अभिभूत है? क्या आज सूदखोर, मुनाफाखोर और पाखण्डी समरकान्त (कर्मभूमि) लोगों से कर्ज वसूल करते नहीं मिल जाता? क्या आज आपके आसपास अनेक सामाजिक विसंगतियों का शिकार होकर तिल–तिल कर मरता हुआ होरी (गोदान) नहीं दिखलाई पड़ता? क्या आज समाज में घीसू, माधव (कफन) और हलकू (पूस की रात) जहां–तहां नहीं दिखलाई देते?

क्या आज सुमन (सेवासदन) नहीं हैं, जिसे यह समाज वेश्या बना देता है, दालमण्डी पर बैठने के लिए विवश कर देता है? क्या आज दालमण्डी आबाद नहीं है? क्या आज दहेज का भयंकर रूप देखने को नहीं मिलता? क्या आज धनाभाव के कारण निर्मला (निर्मला) का विवाह चालीस वर्षीय तोताराम से नहीं होता? क्या आज रानी जान्हवी (रंगभूमि) का स्वाभिमान जाग्रत नहीं है, जो समाज–सेवा करते हुए अपने पुत्र की मृत्यु पर गर्व से फूल नहीं समाती? क्या आज सोफिया (रंगभूमि) अपने प्रेमी को खो देने पर विभिन्न सामाजिक कारणों से गंगा में प्राण विसर्जन करती नहीं दिख पड़ती? अंधेरे से अपना नंगापन ढकने वाली सकीना (कर्मभूमि) क्या आज यह सत्य मर चुका है? क्या आज बुधिया नहीं रह गई है, तो यह मानने मे तनिक भी कठिनाई नहीं हो सकती कि प्रेमचन्द अप्रासंगिक हैं, लेकिन यदि ऐसे सैकड़ों, हजारों, लाखों व्यक्ति हमारे इर्द–गिर्द घूम रहे हैं, तो यह कहना कितना तर्कसंगत होगा कि प्रेमचन्द अप्रासंगिक हैं? समाज में आज भी दहेज प्रथा के कुपरिणाम देखने को मिलते हैं, अनमेल विवाह होते हैं, पाखण्डियों के जत्थे घूम रहे हैं, दालमण्डी आबाद है, सच्चरित्र व्यक्तियों की दुर्गति समाज के हाथों होती है, पुलिस का जुर्म, अत्याचार और अन्याय किसी से छिपा नहीं है, रिश्वत का बाजार गर्म है, मिथ्याभाषी नेताओं की तादात प्रतिदिन बढ़ रही है। तात्पर्य यह है कि प्रेमचन्द ने जो समस्याएं उठाई थीं या जो विकृतियां उस समय में थीं, वे आज भी उसी रूप में, बल्कि उससे भी कहीं अधिक विकराल रूप में दिखलाई पड़ती है। अथार्त् प्रेमचन्द आज और भी प्रासंगिक है।

प्रेमचन्द का साहित्य अपने समय, समाज और ऐतिहासिक स्थितियों से गहरे रूप से जुडा हआ है। उसकी प्रासंगिकता प्रयोजनीयता की उपेक्षा करके हम उसे अप्रासंगिक नहीं कह सकते। वे अपने काल और परिवेश से जुडे हुए लेखक हैं, इसलिए उनके साहित्य में जिस युग–बोध का आभास हमें होता है, वह आज भी परिलक्षित होता है। प्रेमचन्द ने जिस रचनात्मक चेतना से साहित्य सजृन किया है, उस रचनात्मक चेतना से पाठक की चेतना भी जागृत होती है वह कुछ सोचने विचारने के लिए बाध्य हो जाता है। क्या यह प्रेमचन्द की प्रासंगिकता नहीं है?

प्रेमचन्द उन रचनाधर्मियों में है; जिन्होंने सामाजिक और राजनीतिक क्रान्ति का मार्ग प्रशस्त किया। वे हिन्दी साहित्य के इतिहास में जनवादी और यथार्थवादी परम्परा तथा प्रगतिशील परम्परा के जनक भी है। प्रेमचन्द में चली आती हुई रूढ़िगत परम्पराओं से मुक्ति पाने की छटपटाहट भी एकदम स्पष्ट है, जो आज की सर्वाधिक प्रासंगिकता है। इतिहास सापेक्ष रचना ही सार्थक होती है, जिसमें अतीत–वर्तमान का दव्ंदव्ात्मक सम्बंध होता है। क्या ऐसा प्रेमचन्द में नहीं है?

प्रेमचन्द किसी वाद या सम्प्रदाय से बंधकर नहीं चले। प्रगतिशील चिंतक होने के कारण वे सामंतवाद विरोधी, साम्राज्यवाद विरोधी, शोषण विरोधी और सांप्रदायिकता विरोधी संघर्ष के साहित्यकार हैं 'कफन' कहानी में कृषकों और जमींदारों का संघर्ष है, जो वस्ततुः परिस्थितिजन्य ही नहीं, बल्कि परंपरागत भी है 'रंगभूमि' से औदयोगीकरण की समस्या को उठाया गया है। औद्योगीकरण ही नहीं बल्कि प्रेमचन्द ने इस उपन्यास में वर्तमान समाज के सब स्वरों को उधेड़कर सामने रख दिया है। वे अंग्रेजी साम्राज्यवाद की झूठी आदर्शोन्मुखता का ही पर्दा नहीं उठाते, वरन् पूंजीपति, उद्योग संचालक, जमींदार असहाय जनता के होने वाले संघर्ष का यथार्थ रूप भी दिखलाते हैं। ग्रामीण और सामंतशाही का संघर्ष कायाकल्प में भी देखा जा सकता है। इसी प्रकार कर्मभूमि में राजनीतिक जीवन के आन्दोलनों के चित्रण के साथ ही सामाजिक रूढ़ियों और परंपराओं के विरोध के संघर्ष का भी चित्रण किया गया है। गोदान केवल कृषक जीवन का महाकाव्य ही नहीं है; अपितु सामाजिक शोषण का भी अद्वितीय दस्तावेज है। साम्प्रदायिक सद्भाव 'पंच परमेश्वर' रचना की प्रमुख समस्या है। 'मंत्र' कहानी भी इसी साम्पद्रायिक समस्या का परिणाम है। गरीबी और शोषण का जीवंत चित्रण 'सवा सेर गेहूं' और 'पूस की रात' आदि कहानियों में किया गया है। इस प्रकार आज भी पूंजीवाद, जातिवाद, भाषावाद, साम्प्रदायिकता आदि अनेक समस्याएं यथावत् विद्यमान है। प्रेमचन्द जिस सामाजिक और राजनीतिक क्रान्ति के अग्रदूत थे, वह क्रान्ति अभी अधूरी है, क्योंकि समाज आज भी उन समस्याओं से जूझ रहा है, जिनसे प्रेमचन्द का समाज जूझा करता था, उनसे उबर नहीं सका है।

ISSN- 2454-2695
Volume 03 Issue 0
January 2017

साहित्य संहिता

Available at http://www.sahityasamhita.org/

प्रेमचन्द ने रूढ़ियों और अंधविश्वासों का चिट्ठा भी हमारे सामने खोला है। उन्होंने कर्मभूमि में धार्मिक पाखण्ड का रहस्योद्घाटन किया है। एक आलोचक के शब्दों में– गोदान खुद एक अंधविश्वास है। गरीब की हास और बलिदान आदि कहानियों में भूतों का अद्भतु चित्रण किया गया है। प्रेमचन्द साहित्य सामाजिक रूढ़ियों और परंपराओं, अंधविश्वासों तथा टोना–टोटकों पर गहरा प्रहार करता है। यद्यपि शुरू–शुरू में प्रेमचन्द परंपराओं के प्रति अतिरिक्त सहानभूति रखते थे; लेकिन प्रतिभा और प्रौढता के विकास ने उन्हें विरोध करना सिखाया। समाज में व्याप्त विधवा विवाह के विरोध, दहेज प्रथा, अनमेल विवाह, बहु विवाह, जातिवाद, छुआछूत आदि अनेक समाज को जराजीर्ण कर देने वाली परम्पराओं का उन्होंने खुलकर विरोध किया। यही नहीं, विरोध के परिणाम स्वरूप उन्होंने स्वयं अपना विवाह एक बाल विधवा से ही किया। राजनैतिक विकृतियों को लेकर लिखा गया प्रेमचन्द का कथा साहित्य आज भी बासी नहीं पड़ा है। 'सत्याग्रह' कहानी में मोटेराम शास्त्री को रूपया देकर सत्यागह के लिए तैयार किया जाता है। वे इमरती और रसगुल्ला खाकर अनशन पर बैठते हैं, पर शाम होते ही भूख सताने लगती है। 'आहुति' में छात्र अपने साथियों के साथ आन्दोलन में शामिल हो जाता है। 'कुत्सा' में उन लोगों का चित्रण किया गया है जो चन्दे के रूपयों से ऐश फरमाते है। क्या आज ऐसा नहीं होता? फिर प्रेमचन्द को अप्रसांगिक और बासी कहना उचित नहीं प्रतीत होता।

विचारणीय प्रश्न है कि जब संयुक्त परिवार नहीं रहेंगे, विधवा समस्या हल हो जायेगी, दहेज प्रथा की संक्रामक बीमारी से छुटकारा मिल जाएगा, जातिवाद और छुआछूत का बिलकुल अन्त हो जाएगा, रूढ़िया, अंधविश्वास और सड़ी–गली परम्पराएं नहीं होगी, गरीबों और दलितों का शोषण समाप्त हो जाएगा, धामिर्क पाखण्ड लुप्त हो जाएंगे, घूसखोर अधिकारी नहीं होंगे मिथ्याभाषी नेता दवापर के धमर्राज बन जाएंगे और साम्पद्रायिकता समाप्त हो जाएगी, स्वार्थ और लोलपुता का अन्त हो जाएगा, दाल मण्डी उजड़ जाएगी, अनमेल विवाह नहीं होंगे, जुल्मजोर और अत्याचार समाप्त हो जाएंगे। क्या तब भी प्रेमचन्द प्रासंगिक रहेंगे? हम थोड़ी देर के लिए मान लेते हैं कि जब इन समस्याओं और विकृतियों का अन्त हो जाएगा, प्रेमचन्द भी मर जाएंगे। इतने बड़े सामाजिक परिमार्जन की वेदी पर तो कोई भी व्यक्ति प्रेमचन्द क्या विश्व के किसी साहित्यकार को अप्रांसगिक और निरर्थक मानने के लिए तैयार हो सकता है। किन्तु कब 'नौ मन तेल होगा और कब राधा नाचेगी'। साथ ही क्या प्रेमचन्द साहित्य में मात्र उपर्युक्त समस्याओं को ही उठाया गया है? क्या उसमें मानव के शाश्वत मनोभावों और मनोंवृत्तियों–प्रेम, क्रोध, ईष्या, घृणा, स्वार्थ, मानव–मानव के बीच जुडने और टूटने वाले सहज सम्बंध आदि का विश्लेषण नहीं किया गया है? क्या ये मानव–मनोभाव और मनोवृत्तियां मरने वाली हैं? क्या दस–बीस वर्ष बाद इन सबका रूप बदल जायेगा? यदि नहीं तो प्रेमचन्द सदैव प्रासंगिक रहेंगे। हां, यह अलग बात है कि उनकी प्रासंगिकता और उपादेयता का सन्दर्भ बदल सकता है, लेकिन मिट नहीं सकता।

वस्ततुः मानवतावादी लेखक प्रेमचन्द का सारा कथा साहित्य यथार्थ की ठोस भूमि पर आधारित है, जो तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक परिवेश में रचित होने के बावजूद काल और परिवेशबद्ध नहीं, अपितु काल और परिवेश का अतिक्रमण कर सर्वकालिक बन गया है। आज के इस भूमण्डलीकरण के दौर में मंशुी प्रेमचन्द की आवश्यकता बड़ी शिद्दत के साथ महसूस हो रही है।

- प्रेमचन्द : जीवन कला और कृतित्व : हंसराज रहबार, विजय गोयल पब्लिशर्स
- स्त्री अस्मिता के प्रश्न और प्रेमचन्द : विवेक शंकर, नेहा पब्लिशर्स और डिस्ट्रीब्यूटर
- प्रेमचन्द : बिगत् महत्त्व और वर्तमान अर्थवता, मुरली मनोहर प्र० सिंह, नेहा पब्लिशर्स, 2006
- प्रेमचन्द के उपन्यासों का औचित्यपरक अध्ययन : शशि प्रभा